सत्संग परमसंत पुष्करदयाल जी महाराज

दुर्गापुर, दिनांक 17 मई 2015

!! राधा–स्वामी.!!

आप सब यहाँ आये हैं, मेरा जन्मदिन मनाने के लिए और बहुत खुश हो रहें हैं। मगर आप ये नही जानते कि मेरी जिन्दगी का एक साल कम हो गया और आप खुशियाँ मना रहें। चलो कोई बात नही ये भी एक तरीका है हमारी आयु बढाने का। आज आप जन्मदिन मना रहें हैं 13 मई को लेकिन मेरी असली आयु पता है, क्या है? ये शरीर जो है आज 76 साल का हो गया लेकिन मैं 35 साल का हूँ। आप पूछोगे क्यों? 35 साल पहले मुझे गुरू मिले थे। उससे पहले मैं पशु की तरह घूम रहा था। बिन गुरू के मनुष्य पशु ही है। 35 साल पहले मैं भी पशु ही था। मेरे गुरू ने मेरे एक रस्सी बाँध दी और मुझे खींचते चले आये। वो मेरे आगे और मै उनके पीछे–2, उस दिन मेरा दूसरा जन्म हो गया। उस दिन मैं पशु से मनुष्य में परिवर्तित हो गया। बिन गुरू मनुष्य पशु कयों है? क्योंकि मनुष्य अज्ञानी है, जैसे पशु को एक खेत में छोड दो, उसे पता ही नही उसे कहाँ जाना है। वो खेत में इधर–उधर ही घूमता रहेगा जहाँ–2 हरी घास दिखेगी वहीं चलता जाएगा। ठीक ऐसे ही मनुष्य भी है, उसे पता ही नही है उसे कहाँ जाना है, मैं कहाँ से आया हूँ, मै कौन हूँ इसलिए वो पशु जैसा ही है। 99 प्रतिशत लोग संसार में यही समझते हैं– हमारा जन्म हो गया जैसे सबका हो गया, हमारी शादी हो गई जैसे सबकी हो गई, हमें बच्चे पैदा करने हैं जैसे सब पैदा कर रहें हैं। एक दिन हमें मर जाना है जैसे सब मर रहें हैं। 99 प्रतिशत लोग यही समझकर बैठे हैं। अब बताओ मनुष्य और पशुओं में क्या फर्क है। लेकिन जब मनुष्य में ज्ञान आता है फिर वो क्या समझता है? वो समझता है कि मैं संसार में शादी करने, बच्चा पैदा करने नही आया हूँ। मैं किसी ओर काम के लिए आया हूँ, मालिक ने मुझे और किसी काम के लिए भेजा है। मालिक ने मुझे एक मौका दिया है। हम समझते हैं ये संसार है इसी में जीना है, इसी में मरना है बस! यहीं खत्म और हम सोचते हैं कि संसार में दुख ही दुख हैं और ये दुख हमारी जिंदगी का एक हिस्सा हैं।

गुरू नानक देव जी कहते हैं– नानक दुखिया सब संसार।

कबीर साहब जी कहतें हैं– तन धर सुखिया कोई ना देखा।

ये मैं ही नही कह रहा हूँ ये सब कह रहें हैं इस संसार में सुख कम हैं और दुख ज्यादा हैं और हम यही समझे बैठे हैं कि हमें इसी संसार में रहना है और दुख–सुख सहना है। लेकिन जब हमको गुरू मिलता है और गुरू जी कहते हैं भईया इस संसार से अलग एक जगह है, मैं जानता हूँ उस जगह को जहाँ सुख ही सुख है और वहाँ दुख नही है, ये कौन कहता है? ये गुरू कहता है। अब हमको ज्ञान हो गया कि इस संसार से अलग एक जगह ऐसी है जहाँ सुख ही सुख है। अब हमारे पास ऑपशन आ गया कि एक जगह और भी है जहाँ सुख ही सुख है, तो क्यों ना हम वहाँ जाएँ, क्यों हम इस संसार की कीचड में फंसे रहें और पापड बेलते रहें। उस जगह का पता कौन देता है हमकों? उस जगह का पता हमको गुरू देता है। गुरू जिसको मिला वो भाग्यशाली है, गुरू ने एक नई जगह का पता बताया जहाँ सुख ही सुख है, आनन्द ही आनन्द है और वहाँ चिन्ता भी नही है। दुख–सुख कहाँ से आता हे हमको? जब हमारे नाते रिश्ते बनते जाते हैं और मैं कहता हूँ कि ये सारे मेरे हैं और यही मुझे दुखी करते हैं।

किसी शायर ने कहा है–

दुश्मनो से शिकायत नही मुझको, अपने ही सताते हैं।

एक कब्र पर लिखा था–

दुश्मनो से कोई शिकायत नही, अपने ही दफना कर गए।

जब शमशान घाट जाते हैं तो अपना ही बेटा चिता मैं आग लगाता है। इस संसार में दुखी कौन करता है हमको? अपने ही दुखी करते हैं। अपने ही हमको दुखी क्यों करते हैं? ये अपने बनते कहाँ से हैं? ये अपने बनते कहाँ से हैं? ये हमारे पिछले जन्मों के कर्मों के लेन–देन के नाते हैं। ऐसे ही कोई नही जन्मता किसी के घर में, जरूर कोई उसका संबंध होता है पिछले जन्म में तब जाकर जन्मता है उसके घर में और ये मत समझो हमारे घर में बेटा हो गया हम खुश हो गए। नही, कोई बेटा नही हुआ, पिछले जन्मो का लेन–देन पूरा करने आ गया है कोई। हम समझते हैं हमारे घर में बेटा आ गया, हमारे बुढापे का सहारा आ गया और बुढापे में क्या होता है? वो हमको वृन्दावन के वृद्धा आश्रम में डाल के आता है।

वही बेटा जिसके लिए हमने खुशियाँ मनाई, लाखों रूपए उसकी पढाई और शादी में खर्च किये, हमको वृन्दावन के वृद्ध आश्रम में छोडकर आता है। क्या है ये संसार? क्या हैं इस संसार के रिश्ते नाते। ये संसार तो लेन–देन की दुकान है। आते हैं, अपना लेन–देन पूरा हो गया, खत्म।

मेरा बेटा और उसकी पत्नी आपस में बहुत प्यार करते थे।

एक दूसरे के बिना रह नही सकते थे। 25 अगस्त को वो सारा दिन काम करके आई और शाम को टी. वी. देखने बैठ गई और 9 बजे के बाद कहने लगी मुझे बहुत तेज ठण्ड लग रही है। मैने मेड को बुलाया, मेड ने उसके ऊपर रजाई, कंबल डाल दिए। मैंने क्रोसिन की गोली दे दी। कुछ समय बाद उसने बेटे से कहा– मैं वाशरूम जाना चाहती हूँ। बेटे ने उसको पकडकर POT पर बैठाया और उसको उल्टी आ गई और खत्म, संसार छोड दिया। अब समझो कितना प्यार था दोनो में कितना वो अपने पति को चाहती थी लेकिन जाने के टाईम उसने एक सैकिंड के लिए भी नही सोचा कि मेरा पति कितना प्यार करता है मुझसे, मैं इसे छोडकर क्यों जाऊँ, आँख बन्द की और चली गई। क्या यही हैं हमारे संसार में रिश्ते, क्या यही हैं संसार के रिश्ते–नाते और इन्ही पर हम विश्वास करके बैठें? कोई रिश्ता नाता नही है। उसने BPTP मे फ्लैट लिया, मेरी बहू ने लिया और फ्लैट की कीमत थी 80 लाख रूपए और 20 लाख रू0 उसको रेगूलेट करने में लगा दिए। जिस दिन उसने उस फ्लैट में गृह प्रवेश किया, उस दिन उसकी आँखों में खुशी के आँशुओं की धारा बह रही थी और उस एक करोड के फ्लैट को अपने पति के लिए छोडकर चली गई और फिर एक सैकिंड के लिए भी नही सोचा ये मेरा फ्लैट है इसमें मैने सब चीजें इतने शौक से सजाई हैं, मैं इसे छोडकर क्यों जाऊँ। अब मेरी बहू और मेरे बेटे का कोई पिछले जन्म का 1 करोड का लेन–देन था, वो दे दिया और चली गई। इसी तरह ये संसार लेन–देन का है। ये बेटी, बेटा, पति–पत्नी, माँ–बाप ये सब लेन–देन के रिश्ते हैं। अब आप कहोगे कि से लेन–देन के रिश्ते हम क्यों निभाये। अगर हमारे घर में बेटी आ गई तो हमको लेन–देन का रिश्ता करना ही पडेगा। अगर नही दोगे? फिर से जन्म और फिर देना पडेगा, कहीं भी भाग नही पाओगे। अपने कर्मों को यहीं इसी जन्म में खुशी–खुशी निभाते जाओ, यही है हमारे जन्म लेने का मकसद। हम जो कर्मों की टोकरी साथ लेकर आये हैं उस कर्मों की टोकरी को खाली करके जाना है। हमारे शब्दानन्द महाराज कहते थे– one mark less, one year more इसका मतलब है– परीक्षा में पास होने के लिए आपको 33 नम्बर चाहिए, अगर 1 नम्बर कम रह गया तो फिर वही क्लास, वही किताबें, वही पढाई, फिर एक साल उसी कक्षा में रहना है। इसी तरह हम जो कर्मों की टोकरी साथ लाए हैं, उसमें एक कर्म भी रह गया फिर से जन्म लेना है। ये जन्म क्यों मिला है हमको? ये जन्म हमको शादी करने, बच्चे बनाने के लिए नही मिला है। ये जन्म हमको मिला है अपने कर्मों की टोकरी को खाली करो। मालिक कहता है– तुम अपने कर्मों की टोकरी खाली करो और वापिस मेरे पास आ जाओ अपने घर, जहाँ सुख ही सुख है, आनन्द ही आनन्द है, चैन ही चैन, वो घर है अपना। ये संसार हमारा घर नही है। यहाँ हम जीते हैं, मरते है, फिर जीते हैं और फिर मरते हैं। इस जन्म मरण के चक्कर को कहीं तो ब्रेक लगाओ। हमारे पास ऑपशन है, हम जीवन–मृत्यु के चक्कर को रोक लगा सकते हैं और अपने

घर वापिस जा सकते हैं, जहाँ सुख ही सुख, चैन ही चैन, आनन्द ही आनन्द है। यही मेरी समझ में आया, कब? जब मैं पशु से मनुष्य बना। मेरे गुरू ने मेरी खोपडी में ये सारी बातें डाल दी और मुझसे कहा–भईया इस संसार में रहोगे तो पिसते रहोगे। मेरे साथ चलो मैं तुमको बहुत सुंदर जगह ले जाऊँगा, जहाँ आनन्द ही आनन्द है। अब मुझे उस रास्ते पर चलते–चलते 35 साल हो गए। आज मैं फक्र से कहता हूँ कि आज मैं 35 साल का हूँ, ये मेरा दूसरा जन्म है। एक जन्म गुरू भक्ति कर, दूसरे जन्म नाम, जन्म तीसरे मुक्ति पद, चौथे में विश्राम। आप गुरू से प्रेम करो और आपको कुछ नही करना है। गुरू से प्रेम करो और गुरू खुश। गुरू बस्त्र देने से खुश नही होता है, गुरू माला पहनाने से खुश नही होता है। गुरू को खुश करने का तरीका एक ही है, आप गुरू से प्रेम करो और गुरू आपका गुलाम। फिर गुरू को आप जहाँ ले जाना चाहोगे, वही ले जा सकते हो। गुरू प्रेम का भूखा होता है, उसका भोजन ही प्रेम है। प्रेम का मतलब क्या होता है? प्रेम का मतलब है–गुरू की सुनो, गुरू जो कहे उसको मानो, गुरू के कहन`पर चलो। जो गुरू के कहने पर चलता है वो जिन्दगी में कभी धोखा नही खाता है। क्यों? क्योंकि गुरू उसको कभी गलत रास्ता बतायेगा ही नही। गुरू हमेशा अपने प्रेमियों को सही रास्ता बतायेगा। क्योंकि गुरू खुद सही रास्ते पर जा रहा है। गुरू से प्रेम करने का तरीका सिर्फ एक ही है, गुरू जो कहे वही मानो।

गुरू तारेंगे हम जानी, गुरू जब एक बार किसी का हाथ पकडता है तो फिर उसे कभी छोडता नही है। गुरू कहता है–

सब करनी मैं आप कराऊँ, पहुँचा दू धुर दरबारा।
तुमरी चिन्ता मैं मन राखी, तू अचिन्त रह धरो प्यारा।।

आपके हाथ में कुछ नही है, जो करता है गुरू करता है और तुमको अपने साथ भी ले जा सकता हूँ अपने धाम। तुमको क्या करना है? तुमको दो काम करने हैं, एक तो तुम अपनी सारी चिन्ताएँ मुझे दे दो और मुझसे प्रेम करो। इससे सस्ता सौदा और क्या है दुनिया में। गुरू कहता है अपनी सारी चिन्ताएँ मुझे दे दो और मुझसे प्रेम करो, अब इतना सस्ता सौदा भी कोई नही लेता है तो उसका भाग्य खराब है। आप सिर्फ गुरू से प्रेम करो, आपको 2 घण्टे भजन ध्यान में नही बैठना है। अगर कोई कहे कि मैने 2½ घण्टे घण्टे ध्यान लगाया, तो मैं उसकी गुलामी लिख दूँगा। हाँ 2½ घण्टे बैठ जरूर सकता है लेकिन मन इधर उधर घूम रहा होगा।

एक बार कबीर साहब गए थे अपने गुरू रामानंद के पास, तो उनको गेट पर ही रोक लिया और कहा कि गुरू जी तो अभी ध्यान कर रहे हैं, तो इस पर कबीर साहब ने कहा–गुरू जी ध्यान कहाँ कर रहे हैं वो तो जूता खरीद रहे हैं। रामानंद ने उनकी ये बात सुन ली और कहा– इसे बुलाओ, हाँ आप ठीक कह रहे थे, कल मैं बाजार से नये जूते खरीद कर लाया था और वो पैर में सही नही आ रहे थे और मैं सोच रहा था कि कल बाजार जाऊँगा और उनको वापिस करके आऊँगा। तो ये तो है गुरू का हाल, अब आप ही बताओ आप कैसे 2½ घण्टे ध्यान भजन में बैठ सकते हो? कोई 2½ घण्टे नही बैठ सकता। फिर आपको क्या करना है?

कबीर साहब कहते हैं– सहज समाधि। खाते–पीते, चलते–बैठते, सोते–उठते हर समय अपने गुरू का ध्यान रखो। आप जो भी काम करो, गुरू को अपने मन में रखो, बस यही है सहज समाधि। कोई 2½ घण्टे बैठने की जरूरत नही है। 24 घण्टे की समाधि है, काम करते रहो सब, लेकिन हमेशा हर समय गुरू का ध्यान रखो। इससे क्या होगा? इससे आपको एक बहुत बडा फायदा है, इससे आपको कभी (Negetive Thought) नकारात्मक विचार नही आएगा। क्यों? जब 24 घण्टे आपको गुरू कर ध्यान रहेगा, (Negetive Thought) नकारात्मक विचार कभी आएगा ही नही। गुरू से प्रेम करने का यही एक तरीका है 24 घण्टे गुरू का ध्यान करो और यही असली समाधि है।

अगर आपको आजमाना है अपने आपको तो किसी शादी में आप बैठे हो और वहाँ बैण्ड–बाजा बज रहा है अगर एक क्षण के लिए तुमको कोई भी आवाज नही सुन रही है तो वही एक सैकिंड आप की समाधि लग गई और वही एक सैकिंड आपने कमाया।

!! राधा–स्वामी ।।